



CC-12 (UNITED STATES OF AMERICA-1860-1990)

UNIT- II ----- POST CIVIL WAR PERIOD

TOPIC:

"Role of Woodrow Wilson in the progressive"

Vetted By:

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना
सम्पर्कक : 9835463960

डॉ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय,
सम्पर्कक 9430934482

इस टॉपिक में वुडरो विल्सन और उनके प्रगतिवादी विचारों तथा कार्यों का वर्णन किया गया है।

अमेरिकी गृह युद्ध के बाद अमेरिकी अर्थव्यवस्था एवं समाज में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इस समय अमेरिका में कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्रों में तेजी से विकास हुआ। इस विकास के परिणाम स्वरूप समाज में कृषक एवं मजदूर वर्ग के सामने भी कई समस्याएं उत्पन्न हुई, जिसके कारण सुधारों की मांग की गई। इसके अलावा इस समय कुछ लोगों के ही हाथों में पूंजी का केंद्रित हो जाना तथा बड़े उद्योगपतियों के द्वारा राजनीतिक तथा आर्थिक सत्ता अपना लेने से मध्यम वर्ग भी असंतुष्ट होने लगा था। अमेरिका में इस समय सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का पतन भी तेजी से होना शुरू हुआ। ऐसी परिस्थिति में अमेरिका में सुधार आवश्यक प्रतीत होने लगा। इन्हीं परिस्थितियों में वुड्रो विल्सन अमेरिका के राष्ट्रपति बने।

जब विल्सन अमेरिका के 28 वे राष्ट्रपति के रूप में 1913 में शपथ लिया, उस समय अमेरिका एक विकसित देश की श्रेणी में तो आ गया था परंतु इसके साथ ही अमेरिकी अर्थव्यवस्था एवं समाज में कई तरह की समस्याएं भी उत्पन्न हो गई हुई थी। परंतु विल्सन इस समय उस धर्म नेता की तरह प्रकट हुआ जो प्रगतिवादी धर्म में उसका वास्तविक नेतृत्व करता और जनता में अपने प्रति विश्वास जगा पाता। विल्सन ने नई स्वंत्रता का नारा दिया जिसके अनुसार संघीय सर राष्ट्रपति बनने के बाद विल्सन ने जो कार्य किया उससे अमेरिका और शक्तिशाली देश के रूप में उभर कर सामने आया। अगर देखा जाए तो प्रगतिवादी इतिहास में वुड्रो विल्सन का काल विशेष महत्व का रहा। अपने राष्ट्रपति चुने जाने के साथ ही उसने जन भावना का परिचय देते हुए कहा "हमें वह प्रत्येक चीज समाप्त कर देनी है जिससे विशेषाधिकार या विशेष सुविधाओं का लक्षण हो। विल्सन प्रशुल्क को अपना पहला मुद्दा बनाया और कहा की "द टैरिफ ड्यूटीज मस्ट बी अलर्ट"। 1913 में प्रसिद्ध "अंडरवुड टैरिफ" पारित हुआ जिसके अंतर्गत कुछ महत्वपूर्ण उपभोक्ता वस्तुओं और कच्चे माल पर प्रशुल्क में प्रभावशाली कमी की गई। इनमें खाद्य पदार्थों, सूती और उनी वस्तुओं

तथा लोहा और इस्पात सम्मिलित था। इसके अतिरिक्त अनेक वस्तुओं पर से प्रशुल्क बिल्कुल हटा लिया गया। इस प्रकार का प्रशुल्क को नीचे लाने का यह अत्यंत ईमानदार प्रयास था।

राष्ट्रपति विल्सन ने ना केवल व्यापारिक गतिविधियों पर ध्यान दिया बल्कि उसने बैंकिंग व्यवस्था एवं मुद्रा व्यवस्था में भी व्यापक सुधार लाने का प्रयास किया। इसने बैंकों का पुनर्गठन किया। 1913 ईसवी में ही "फेडरल रेवेन्यू एक्ट" के द्वारा संपूर्ण देश को वित्तीय दृष्टि से 12 जिलों या भागों में बांट दिया गया और प्रत्येक में एक फेडरल रिजर्व बैंक की स्थापना की गई जो एक फेडरल रिजर्व बोर्ड द्वारा निर्देशित किए जाने लगी। मुद्रा के निस्तारण में थोड़ी ढीलाई देने की दृष्टि से व्यापारीक पक्ष आवश्यकता को देखते हुए फेडरल रिजर्व नोट उपलब्ध भी करवाए गए।

विल्सन ने अमेरिका के विकास के लिए एक फेडरल ट्रेड कमिशन की स्थापना की। इसके द्वारा अंतरराष्ट्रीय व्यापार में होने वाली प्रतिद्वंद्विता में प्रयुक्त अनैतिक तरीकों को रोका गया। 1913 ईसवी में कानून पारित कर रेलगाड़ी के नियंत्रण के लिए आई.सी.सी के अधिकारों में वृद्धि की गई। पुनः 1914 में दोनों ही दलों की अनुदारवादियों द्वारा आरोपित संशोधनों के बावजूद ट्रस्ट नियंत्रण के पुराने कानूनों और अंतःबद्ध निदेशालय के दोषों को ठीक किया गया। विभिन्न क्रयकर्ताओं के लिए वस्तुओं के मूल्यों में होने वाले अंतरों को सीमित किया गया और किसी भी संगठन के लिए केवल उसी वस्तुओं का संग्रह किया जाना वैध रह गया जिसमें वह व्यापार करता था।

यह बात सही है कि 1914 से 1915 के बीच विलसन की प्रगतिवादी चेतना कुछ धीमी रही और उसने कई ऐसे कानूनों को पारित नहीं होने दिया जो समाज के शोषित या उपेक्षित वर्गों की हित में होते। परंतु 1916 के चुनाव के समय में उसने पुनः कृषको और श्रमिकों का साथ लिया और अपने द्वितीय राष्ट्रपति के काल में उसने कई ऐसे कानून पारित करवाए जो

उसकी सुधारवादी चेतना की पुनः प्रबल होने का परिचायक रहे। इस दौरान उसने किसानों को कई सुविधाएं भी उपलब्ध करवाई। 1916 में विल्सन ने "फेडरल फॉर्म लोन एक्ट" द्वारा कम ब्याज पर किसानों को ऋण उपलब्ध करवाने की व्यवस्था की। "क्लेटन एक्ट" के ही माध्यम से श्रमिकों से संबंधित विवादों में न्यायालय के द्वारा अग्रिम हस्तक्षेप प्रतिबंधित कर दिया गया। 1915 के "सीमेंस एक्ट" के द्वारा समुद्री यातायात से संबंधित निर्माण कार्यों में कार्यरत श्रमिकों के कार्य करने की स्थितियों में सुधार किया गया। 1916 की "फेडरल वर्किंग मेंस कंपनसेशन एक्ट" से नागरिक सेवाओं में कार्यरत व्यक्तियों को भी मुआवजा देना स्वीकार किया। रेल मार्गों में कार्य करने वाले श्रमिकों के लिए भी 8 घंटा प्रतिदिन काम करना निश्चित किया। इसके अतिरिक्त छोटे-छोटे कानून को उसने समाप्त कर किसानों को एवं श्रमिकों के हितों से संबंधित कानून पारित की।

विल्सन के प्रगतिवादी

विचारों का ही प्रभाव था कि वह न केवल आर्थिक नीतियों में सफल रहा बल्कि विदेशों में भी उसका प्रभाव उस समय सबसे ज्यादा रहा खासकर जब प्रथम विश्व युद्ध के बाद पेरिस शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया तब विल्सन की सिद्धांतों खासकर 14सूत्री सिद्धांतों को विशेष महत्व दिया गया और इसी का परिणाम था कि विश्व में शांति व्यवस्था को कायम रखने के लिए राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

विल्सन

के कार्यों देखते हुए इस कस्ता कहा जा सकता है कि वह एक भविष्य कुछ जानने वाला और आदर्शवादी होते हुए भी लिंकन के बाद सबसे अच्छा अधिक यथार्थवादी और निपुण राजनीतिक नेता था। विल्सन में पूर्व विमान (ओल्ड टेस्टामेंट), प्लेटो के "दार्शनिक राजा" एवं मैकियावेली के "राजकुमार" के तत्वों का समावेश था।

